सप्तांग सिद्धांत

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – IV, B.A. 2nd Year

कौटिल्य को भारतीय राजनीतिक विचारों का जनक माना जाता है । उनका जन्म चौथी ईसा पूर्व मगध राज्य में हुआ। उनके बचपन का नाम विष्णुगुप्त था तथा उन्हें चाणक्य भी कहा जाता है । उन्होंने विश्व प्रसिद्ध पुस्तक "अर्थशास्त्र" की रचना की । उनकी शिक्षा-दीक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय में हुई बाद में वे वहीं अध्यापक भी थे। एक बार नन्द राजा द्वारा आयोजित ब्राह्मण भोज में उन्हें आमंत्रित किया गया जहाँ नन्द राजा ने कौटिल्य का अपमान किया। इसके चलते कौटिल्य ने नन्द वंश का समूल नाश करने की प्रतिज्ञा की । उन्होंने चन्द्र गुप्त मौर्य नामक एक सैनिक को प्रशिक्षण प्रदान किया तथा उसके द्वारा नन्द वंश का तख्तापलट कर दिया । इसी के साथ महान् मौर्य वंश का उत्थान हुआ। कौटिल्य ने सर्वप्रथम एक व्यवस्थित राज्य व्यवस्था का विचार प्रदान किया ।

उन्होंने राज्य की उत्पत्ति का समझौतावादी सिद्धांत दिया है अर्थात् उन्होंने कहा कि राज्य में पहले मत्स्य् न्याय था जिसके चलते अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी। तब लोगों ने मनु को अपना राजा चुना। राज्य के लोगों ने मनु को कर के रूप में अपने अनाज का छठा भाग, व्यापार का दसवाँ भाग तथा पशु व्यापार लाभ का पचासवाँ भाग देने का वचन दिया।

सप्तांग सिद्धान्त -

कौटिल्य ने राज्य के सात अंगों का वर्णन किया है तथा राज्य के सभी अंगों की तुलना शरीर के अंगों से की है । जबकि आधुनिक राज्यों में राज्य के चार लक्षण या अंग पाए जाते हैं। वैदिक

साहित्य तथा प्रारंभिक धर्मसूत्रों में दी गयी जानकारी के बाद भी हम राज्य की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दे सकते । इसका कारण यह है, कि इस समय तक राज्य संस्था को ठोस आधार नहीं मिल सका था। उत्तरी भारत में विशाल राजतंत्रों की स्थापना के साथ ही राज्य के स्वरूप का निर्धारण किया गया । सर्वप्रथम कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में ही राज्य की सही परिभाषा प्राप्त होती है । यह राज्य को एक सजीव एकात्मक शासन-संस्था के रूप में मान्यता प्रदान करता है, तथा उसे सात प्रकृतियों अर्थात् अंगों में निरूपित करता है, जो निम्नलिखित हैं-

1. **स्वामी**
2. **अमात्य**
3. **भू-प्रदेश(जनपद)**
4. **दुर्ग**
5. **कोष**
6. **सेना**
7. **मित्र**

1. राजा या स्वामी

कौटिल्य ने राजा को राज्य का केंद्र व अभिन्न अंग माना है तथा उन्होनें राजा की तुलना शीर्ष से की है। उनका मानना है कि राजा को दूरदर्शी, आत्मसंयमी, कुलीन, स्वस्थ, बौद्धिक गुणों से संपन्न, उच्चकुल में उत्पन्न, विनयशील, सत्यनिष्ठ , स्थूललक्ष, क्रतज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, धर्मात्मा, वृद्धदर्शी, सुख एवं दुःख में धैर्यशाली, बुद्धिमान, दैवसम्पन्न, आलस्यरहित, महान उत्साह युक्त, दृढ निश्चयी, बडी मंत्रिपरिषद वाला, सामंतों को आसानी से वश में करने वाला तथा महावीर होना चाहिए। वे राजा को कल्याणकारी तथा जनता के प्रति उत्तरदायी होने

की सलाह देते हैं क्योंकि उनके अनुसार राजा कर्तव्यों से बँधा होता है । हालाँकि वे राजा को सर्वोपरि मानते हैं परन्तु उसे निरंकुश शक्तियाँ नहीं देते । उन्होनें राजा की दिनचर्या को भी पहरों में बाँटा है अर्थात् वे राजा के लिए दिन को तथा रात को आठआठ पहरों में विभाजित करते हैं ।

2. अमात्य या मंत्री

कौटिल्य ने अमात्य और मंत्री दोनों की तुलना की "आँख" से की है । उनके अनुसार अमात्य तथा राजा एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं । अमात्य उसी व्यक्ति को चुना जाना चाहिए जो अपनी जिम्मेदारियों को सँभाल सके तथा राजा के कार्यों में उसके सहयोगी की भांति भूमिका निभा सके । अर्थाशास्र में अमात्य शब्द का प्रयोग सभी उच्च श्रेणी के पदाधिकारियों के लिये किया गया है । इन मंत्रियों में से योग्यतानुसार सम्राट अपने मंत्रियों तथा अन्य सलाहकारों की नियुक्ति करता था । कौटिल्य कहता है, कि जनपद संबंधी सभी कार्य अमात्य के ऊपर ही निर्भर करते हैं । कृषि संबंधी कार्य,दुर्ग निर्माण, जनपद का कल्याण, विपत्तियों से रक्षा, अपराधियों को दंड देना, राजकीय करों को एकत्रित करना आदि सभी कार्य अमात्यों द्वारा ही किये जाने चाहिये । मौर्योत्तर युग में अमात्य को सचिव कहा जाने लगा था ।

3. जनपद

कौटिल्य ने इसकी तुलना "पैर" से की है । जनपद का अर्थ है "जनयुक्त भूमि". कौटिल्य ने जनसंख्या तथा भू-भाग दोनों को जनपद माना है । उन्होनें दस गाँवों के समूह में "संग्रहण", दो सौ गाँवों के समूह के बीच "सार्वत्रिक", चार सौ गाँवों के समूह के बीच एक "द्रोणमुख" तथा आठ सौ गाँवों में एक "स्थानीय" अधिकारी की स्थापना करने की बात कही है । **मनुस्मृति** तथा **विष्णु स्मृति** में जनपद को **राष्ट्र** कहा गया है । याज्ञवल्क्य स्मृति में जनपद

को जन कहा गया है । राष्ट्र से तात्पर्य भू-प्रदेश तथा जन से तात्पर्य जनसंख्या से है । अर्थशास्त्र में जनपद शब्द का प्रयोग भू-प्रदेश तथा जनसंख्या दोनों के लिये किया गया है ।

कौटिल्य ने जनपद के लिये कहा है, कि जनपद की जलवायु अच्छी होनी चाहिये, उसमें पशुओं के लिये चारागाह हो, जहाँ कम परिश्रम में अधिक अन्न उत्पन्न हो सके, जहाँ उद्यमी कृषक रहते हों, जहाँ योग्य पुरुषों का निवास हो, जहाँ निम्न वर्ग के लोग विशेष रूप से रहते हों तथा जहाँ के निवासी राजभक्त एवं चरित्रवान हों...।

जनपद की जनसंख्या के विषय में कौटिल्य का विचार है, कि एक गाँव में कम से कम सौ तथा अधिक से अधिक पाँच सौ परिवार रहने चाहिये । जनपद की सबसे बड़ी इकाई स्थानीय में आठ सौ ग्राम होने चाहिये ।

4. दुर्ग

दुर्ग राज्य का महत्त्वपूर्ण अंग था। मनुस्मृति में तथा महाभारत के शांतिपर्व में दुर्ग को पुर कहा गया है । दुर्ग शब्द का अर्थ किला है, किन्तु अर्थशास्त्र में इसका वर्णन दुर्गीकृत राजधानी से है। पुर का भी यही अर्थ है । दुर्ग निवेश प्रकरण में कौटिल्य दुर्ग की विशेषतायें बताता है । तदनुसार दुर्ग का निर्माण नगर के केन्द्र भाग में किया जाना चाहिये तथा प्रत्येक वर्ण तथा कारीगरों के निवास के लिये नगर में अलग-2 व्यवस्था होनी चाहिये । कौटिल्य ने दुर्ग की तुलना “बाँहों” या “भुजाओं” से की है तथा उन्होंने चार प्रकार के दुर्गों की चर्चा की है:-

i) औदिक दुर्ग-जिसके चारों ओर पानी हो ।

ii) पार्वत दुर्ग-जिसके चारों ओर चट्टानें हों ।

iii) धान्वन दुर्ग-जिसके चारों ओर ऊसर भूमि ।

iv) वन दुर्ग-जिसके चारों ओर वन तथा जंगल हो ।

5. कोष

इसकी तुलना कौटिल्य ने "मुख" से की है । उन्होंने कोष को राज्य का मुख्य अंग इसलिए माना है क्योंकि उनके अनुसार कोष से ही कोई राज्य वृद्धि करता है तथा शक्तिशाली बने रहने के लिए कोष के द्वारा ही अपनी सेना का भरण-पोषण करता है । उन्होंने कोष में वृद्धि का मार्ग करारोपण बताया है जिसमें प्रजा को अनाज का छठा, व्यापार का दसवाँ तथा पशु धन के लाभ का पचासवाँ भाग राजा को कर के रूप में अदा करना होगा । कौटिल्य राज्य के सातवें अंग कोष को बहुत अधिक महत्त्व देता है। कौटिल्य कहतै है,कि धर्म तथा काम संबंधी संपूर्ण कार्य कोष के माध्यम से ही संपन्न होते हैं। सेना की स्थिति कोष पर ही निर्भर करती है। कोष के अभाव में सेना पराये के पास चली जाती है, यहां तक कि स्वामी की हत्या कर देती है। कोष सब प्रकार के संकट का निर्वाह करता है। कौटिल्य का मत है,कि राजा को धर्म और न्यायपूर्वक अर्जित कोष अर्थात् धन का संग्रह करना चाहिये। कोष स्वर्ण, रजत, बहुमूल्य रत्नों, मणियों, मुद्राओं आदि से परिपूर्ण होना चाहिये, ऐसा कोष अकालादि विपत्तियों का सामना करने में समर्थ होता है।

6) दंड या सेना

कौटिल्य ने सेना की तुलना "मस्तिष्क" से की है । उन्होंने सेना के चार प्रकार बताये हैं- हस्ति सेना, अश्व सेना, रथ सेना तथा पैदल सेना । उनके अनुसार सेना ऐसी होनी चाहिए जो साहसी हो, बलशाली हो तथा जिसके हर सैनिक के हृदय में देशप्रेम हो तथा वीरगति को प्राप्त हो जाने पर जिसके परिवार को उस पर अभिमान हो । दंड से तात्पर्य सेना से है। इसमें अनुवांशिक, भाड़े पर लिये गये, जंगली जातियों से लिये गये एवं निगम के सैनिक होते थे। सेना में पैदल, रथ, गज तथा घोड़े सभी थे। कौटिल्य सेना में भर्ती के लिये क्षत्रियों को सबसे सही

मानता है। उसने **वैश्य** तथा **शूद्र** वर्ण से भी उनकी संख्या के अनुसार सैनिक लिये जाने का समर्थन किया है।

कौटिल्य ने सेना की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं- सेना को सदा राजा के अधीन रहना चाहिये। सैनिकों के परिवार का भरण-पोषण राज्य का कर्त्तव्य है। शत्रु पर चढाई आदे के समय सैनिकों की सुख-सुविधा के लिये आवश्यक भोग्य वस्तुयें उपलब्ध कराना आवश्यक है।

7) मित्र

मित्र को कौटिल्य ने "कान" कहा है । उनके अनुसार राज्य की उन्नति के लिए तथा विपत्ति के समय सहायता के लिए राज्य को मित्रों की आवश्यकता होती है । कौटिल्य द्वारा वर्णित राज्य का अंतिम अंग मित्र था । मित्र की विशेषता कौटिल्य ने इस प्रकार बताई हैं- मित्र पिता-पितामह के क्रम से चले आ रहे हों, नित्यकुलीन, दुविधा रहित, महान एवं अवसर के अनुरूप सहायता करने वाले हों। मित्र तथा शत्रु में भेद बताते हुये कौटिल्य लिखता है कि शत्रु वह है, जो लोभी, अन्यायी, व्यसनी एवं दुराचारी होता है । मित्र इन दुर्गणों से रहित होता है ।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि कौटिल्य द्वारा वर्णित राज्य के सात तत्व शरीर के तत्वों की भाँति ही हैं। ये तत्व एक दूसरे के पूरक होते हैं तथा किसी के भी अभाव में कोई दूसरा पूरा नहीं कर सकता। इन तत्वों को राज्य की स्वाभाविक संपदा कहा गया है। राज्य के अस्तित्व को बनाये रखने तथा उसकी व्यवस्था को समुचित ढंग से चलाने के लिये सभी अंगों का समन्वय अनिवार्य है।